IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत अतिउच्च शिक्षित –शिक्षकों की कार्य संतुष्टि का अध्ययन

निर्देशक -डा. भरत कुमार पण्डा

सहायक प्राध्यापक,म.गा.अं.हि.वि.वर्धा ,महाराष्ट्र।

अनूप मिश्र

सहायक प्राध्यापक (अतिथि)ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय दरभंगा (जे एन कॉलेज नेहरा)

बी.एड.-एम.एड.(एकीकृत)2016-2019

1.सारांश- शिक्षा एक अनवरत चलने वाली प्रक्रिया है यह व्यक्ति के जन्म से लेकर मृत्यु तक चलती रहती है। शिक्षा के द्वरा व्यक्ति शारीरिक,मानसिक,सामाजिक तथा आर्थिक आदि सभी गुणों का विकास करता है। व्यक्ति यदि शिक्षित नहीं है तो वह अपने जीवन में आने वाली कठिनाइयों का सामना नहीं कर सकता है अतः शिक्षा व्यक्ति के अन्दर जीवन जीने की कला का विकास करती है। शिक्षा मानव को एक अच्छा इन्सान बनाती है। शिक्षा में ज्ञान उचित आचरण और तकनिकी दक्षता,शिक्षण और विद्या प्राप्ति आदि समविष्ट है। इस प्रकार यह कौशलो व्यापारों या व्यवसायों एवं मानसिक, नैतिक और सौन्दर्य विषयक के उत्कर्ष पर केन्द्रित है। शिक्षा समाज की एक पीढ़ी द्वारा अपने से निचले पीढ़ी को अपने ज्ञान के हस्तानान्तरण का प्रयास है। इस विचार से शिक्षा एक संस्था के रूप में काम करती है जो व्यक्ति विशेष को समाज से जोड़ने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है तथा समाज के संस्कृति को निरंतरता को बनाये रखती है शिक्षा द्वारा समाज के आधारभूत नियमों व्यवस्थाओं समाज के प्रतिमानों एवं मूल्यों को सीखता है बच्चा समाज से तभी जुड़ पाता है जब वह उस समाज विशेष के लिए इतिहास से अभिमुख होता है। शिक्षा व्यक्ति के अंतर्निहित क्षमता तथा उसके व्यक्तित्व को विकास करने वाली प्रक्रिया है। यही प्रक्रिया उसे समज में एक व्यस्क की भूमिका निभाने के लिए समाजीकृत करती है तथा समज के सदस्य एवं एक जिम्मेदार नागरिक बनने के लिए व्यक्ति को एक आवश्यक ज्ञान तथा कौशल उपलब्ध कराती है। **दीक्षित,एम.(1986) ने "प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षकों तथा माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों की कार्य संतुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन"** विषय पर अध्ययन किया

जिसके उद्देश्य थे- 1.प्राथमिक एवं माध्यमिक विद्यालय के शिक्षको की कार्य संतुष्टि का मापन करना 2.शिक्षकों की कार्य संतुष्टि के स्तर पर उनके लिंग शिक्षण अनुभव और शिक्षण के माध्यम के प्रभाव की जांच करना।

न्यायदर्श- न्यायदर्श में लखनऊ में कार्यरत 300 प्राथमिक एवं 300 माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों को सम्मिलित किया गया।

इन उद्देश्यों को ध्यान में रखकर शोध करते हुए **निष्कर्ष** पाया गया कि- 1.हिंदी माध्यम वाले विद्यालयों में प्राथमिक विद्यालय के शिक्षक माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों की तुलना में अधिक संतुष्ट थे 2.अंग्रेजी माध्यम वाले विद्यालयों में प्राथमिक विद्यालय के शिक्षकों एवं माध्यमिक एवं माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों की तुलना में अधिक संतुष्ट थे 3.प्राथमिक एवं माध्यमिक विद्यालयों की महिला शिक्षिकाए पुरुष शिक्षकों की अपेक्षा अधिक संतुष्ट थी 4.माध्यमिक विद्यालयों के वे शिक्षक जिनकी सेवा अवधि सबसे ज्यादा थी वे अधिक संतुष्ट थे।

सिंह,त्रिवेणी(1988) ने **"माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों की कार्य संतुष्टि और सामाजिक-आर्थिक स्थिति के संदर्भ में उनकी शिक्षण दक्षता का अध्ययन"** विषय पर अध्ययन किया। इस अध्ययन में माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों की कार्य-संतुष्टि और सामाजिक-आर्थिक स्थिति के परिप्रेक्ष्य में उनकी शिक्षण दक्षता का अध्ययन किया तथा साथ ही**"शिक्षण दक्षता मापनी"** का भी निर्माण किया गया।

न्यायदर्श-न्यायदर्श में फ़ैजाबाद मण्डल के कक्षा 10 के 1500 विद्यार्थी (1000 लड़के व 500 लड़कियों) तथा माध्यमिक विद्यालय के 300 शिक्षकों(200 पुरुष व 100 महिला) को सम्मिलित किया गया। प्रत्येक शिक्षक को कुछ के अपने 5 विद्यार्थियों ने ग्रेडिंग प्रदान कर आकडे एकत्र करने के लिए कुमार एवं मुथा द्वारा निर्मित कार्य संतुष्टि प्रश्नावली,कुलश्रेष्ठ द्वारा निर्मित सामाजिक,आर्थिक स्थिति मापनी एवं स्वनिर्मित शिक्षण दक्षता मापनी का प्रयोग किया गया।

इस अध्ययन के उद्देश्य निम्न थे- 1.माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों की कार्य संतुष्टि और शिक्षण दक्षता के मध्य सम्बन्ध का अध्ययन करना 2.माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों की सामाजिक-आर्थिक स्थिति और उनकी शिक्षण दक्षता के मध्य सम्बन्ध का अध्ययन 3.माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों की सामाजिक स्थिति और उनकी कार्य संतुष्टि के मध्य सम्बन्ध का अध्ययन 4.ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों में कार्यरत माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों का शिक्षण दक्षता का तुलनात्मक अध्ययन करना। इन उद्देश्यों को ध्यान में रखकर शोध किया गया,जिनके निष्कर्ष निम्न थे- 1.माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों की कार्य संतुष्टि,शिक्षण दक्षता और सामाजिक,आर्थिक स्थिति के मध्य धनात्मक सहसंबंध पाया गया 2.माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों की सामाजिक आर्थिक स्थिति और कार्य संतुष्टि

के मध्य धनात्मक सहसंबंध पाया गया 3.माध्यमिक विद्यालय के पुरुष एवं महिला शिक्षकों की शिक्षण दक्षता में सार्थक अंतर पाया गया 4.पुरुष शिक्षकों की अपेक्षा महिला शिक्षक अधिक दक्ष पायी गयीं।

अत्रेय,जयशंकर(1989) ने **"महाविद्यालयी शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता के सम्बन्ध में उनके मूल्यों एवं उनकी कार्य संतुष्टि का अध्ययन"** विषय पर अध्ययन किया जिसके निम्नलिखित उद्देश्य थे- 1.कम औसत एवं उच्च शिक्षण प्रभावशीलता वाले शिक्षकों की पहचान करना 2.कम औसत एवं उच्च शिक्षण प्रभावशीलता वाले शिक्षकों के मूल्यों एवं उनमे कार्य संतुष्टि की मात्रा का पता लगाना 3.शिक्षकों की शिक्षण प्रभाविकता पर उनके मूल्यों एवं कार्य संतुष्टि के प्रभाव का पता लगाना।

न्यायदर्श- अध्ययन में न्यायदर्श हेतु मेरठ विश्वविद्यालय के 11 महाविद्यालयों के 600 अध्यापकों का संयोगिक विधि से चयन कर घटनोत्तर अनुसन्धान की गयी । उपकरण के रूप में गिलानी द्वारा निर्मित एक नए मूल्य परीक्षण,कुमार द्वारा निर्मित शिक्षक व्यावसायिक परीक्षण प्रश्नावली तथा मूथा द्वारा एडापटेड शिक्षण प्रभाविकता मापनी का प्रयोग किया गया। इस अध्ययन के उपरांत यह निष्कर्ष पाया गया कि- 1.यह पाया गया कि महाविद्यालय स्तर पर शिक्षण प्रभाविकता शिक्षकों के मूल्यों एवं उनकी कार्य संतुष्टि से सार्थक सम्बन्ध रखती है 2.शिक्षण प्रभाविकता प्रसमान-प्रसंभावना वक्र का अनुसरण करती प्रतीत हुयी 3.प्रभावशाली शिक्षक और अप्रभावशाली शिक्षकों की कार्य संतुष्टि में स्पष्ट अंतर दिखाई दिया तथा उनमे प्रकृति प्रदत्त मूल्य जो उनकी शिक्षण प्रभाविकता को प्रभावित करती थी परिलक्षित हुए।

2. प्रस्तावना- शिक्षक, शिक्षा प्रक्रिया में एक धुरी के सामान होता है । आधुनिक युग में शिक्षक का बहुत ही महत्वपूर्ण स्थान है। शिक्षा प्रक्रिया में सक्रिय रूप में भाग लेने वाले शिक्षा और शिक्षार्थी होतें हैं। शिक्षक के निर्देशन के अभाव में छात्र ज्ञान अर्जित नहीं कर सकतें। शिक्षक का प्रमुख दायित्व अपने छात्रों को शिक्षण एवं निर्देशन प्राप्त करके देश के भविष्य निर्माण में सहायक होना है । अंग्रेज शिक्षाशात्री जान एडम शिक्षा के दो अंग मानते थे एक प्रभावित होने वाला अर्थात शिक्षार्थी और दूसरा प्रभावित करने वाला अर्थात शिक्षक। अंग्रेज विद्वान रायबर्न शिक्षा के तीन अंग स्वीकार करतें हैं –शिक्षक,शिक्षार्थी और पाठचर्या। पिछले पचास वर्षों में शिक्षा के क्षेत्र में अत्यधिक प्रगति हुई है। इस दौरान शैक्षिक तकनिकी का अत्यधिक विकास हुआ है शैक्षिक तकनिकी विशेषज्ञों की दृष्टि से शिक्षा के तीन अंग होतें हैं। शिक्षार्थी शिक्षक और सीखने सीखाने की परिस्थितियां और इन सीखने सीखाने की परिस्थितियों में शिक्षा की पाठचर्या शिक्षण विधियाँ और शिक्षण साधन प्राकृतिक पर्यावरण सामाजिक पर्यावरण और मुल्यांकन की विधियाँ आतीं हैं। आज अधिकतर विद्वान इन्ही तीनो को शिक्षा का अंग मानते हैं।- शिक्षकों की

योग्यता के संदर्भ में बात की जाय तो यह उपर्युक्त कई स्तरों में विभक्त है तथा विभिन्न स्तरों में विभिन्न योग्यता प्रमाण पत्र की भी आवश्यकता है। प्रायः हम तीन वर्गों में बांटकर यह देखने का प्रयास करेंगें कि इन तीनो स्तरों में एक शिक्षक की क्या योग्यता होनी चाहिए।

इसे निम्न तालिका द्वारा स्पष्ट कर सकतें हैं-

प्राथमिक	**माध्यमिक**	**उच्च शिक्षा**
• बी.एड. या डी.एड.होना चाहिए।	• बी.एड. डिग्री होनी चाहिए।	• एम.ए. 55% मार्क के साथ होना चाहिए।
• इसके अलावा कई राज्य T.E.T.(Teacher Eligblity test) लेतें हैं	• टी. जी. टी. या पी.जी.टी. का प्रावधान है।	• राष्ट्रीय स्तर पर एक नेशनल एलिजब्लिटी टेस्ट(NET) का आयोजन किया जाता है जिसे उच्च शिक्षा में जाने के लिए उत्तीर्ण करना अनिवार्य है।
• तथा राष्ट्रीय स्तर पर C.T.E.T. (Central leval teacher elijblity test) की परीक्षा होती है।		• इसके अतिरिक्त पी.एच.डी. भी उच्च शिक्षा में जाने का रास्ता तैयार करता है • एम.फिल.

इस तालिका के द्वारा हम यह कह सकतें हैं कि उच्च शिक्षा शिक्षक व्यावसाय में अंतिम पड़ाव है जिसमे विद्यार्थी का बहुत समय लगा हुआ होता है। इस प्रकार विभिन्न स्तर पर अलग अलग योग्यता प्रमाण पत्र की आवश्यकता होती है।वर्तमान समय में उन्नत ज्ञान-विज्ञान की अवस्था में जहाँ भूमंडलिकरण के कारण सम्पूर्ण विश्व एक गाँव में बदल गया है। ऐसे में शिक्षकों की जिम्मेदारियाँ और अधिक बढ़ गई है।

शिक्षकों की समस्याएं- आधुनिक युग भूमंडलीकरण का युग है और आज समाज अत्यधिक जटिल होता जा रहा है जिससे एक का प्रभाव दुसरे पर स्वमेव ही पड़ना लाजमी है। अतः शिक्षको के सम्मुख भी अनेक प्रकार की समस्याएं विद्यमान हैं जिन्हें इस प्रकार व्यक्त किया जा सकता है –

1.सामाजिक समस्या

2.मनोवैज्ञानिक समस्या

3.वातावरण से सामंजस्य सम्बन्धी समस्या

4. पारिवारिक समस्या

5. राजनितिक समस्या

सामाजिक समस्या- मनुष्य समाज का ही एक सदस्य होता है तथा उसी समाज में ही अपनी जीविकोपार्जन का जरिया ढूंढता है। जीविकोपार्जन के लिए वह समाज में अनेक प्रकार के व्यवसायिक प्रवृतियों को अपनाने की कोशिश में लगा रहता है और जब तक उसे उस जीविकोपार्जन के साधन से संतुष्टि नहीं मिलती तब तक वह यह कोशिश करता रहता है। उसी समाज का सदस्य शिक्षक भी होता है जो समाज में रहकर अपने अध्यापन कार्य से समाज के प्रत्येक सदस्य को शिक्षा प्रदान करता है चुकि वह शिक्षक भी एक परिवार का भरण-पोषण कर रहा होता है जिस प्रकार समाज को एक शिक्षक से यह अपेक्षा रहती है कि वह समाज के प्रत्येक सदस्य को निष्पक्ष होकर शिक्षा प्रदान करे और उसी प्रकार वह शिक्षक भी उस समाज से यह अपेक्षा करता है कि समाज उसकी भलाई के बारे में निष्पक्ष होकर सोचे। सामाजिक समस्या के अंतर्गत शिक्षक के साथ भाषा,लिंग , जाति,धर्म के आधार पर भेदभाव किया जाता है जो शिक्षको को अध्यापन क्रिया में बाधा पंहुचाने का कार्य करता है। यह समस्या सुनने में हमें छोटी लगती है लेकिन यह कभी-कभी वृहत रूप धारण कर लेती है।

मनोवैज्ञानिक समस्या- शिक्षक कभी कभी मनोवैज्ञानिक समस्या से भी ग्रसित होता है जो समाज के लिए एक विकट समस्या के रूप में सामने मौजूद होता है। मनोवैज्ञानिक समस्या के अंतर्गत शिक्षक का व्यवहार का परिवर्तित होना, शिक्षक का अध्यापन कार्य में रूचि न लेना, बार बार कक्षा से दूर भागना, ख्यालों में खोये रहना तथा अध्यापन प्रक्रिया में सम्पूर्ण न दे पाना आदि।

वातावरण से सामंजस्य सम्बन्धी समस्या- शिक्षक जब विद्यालयी वातावरण में जाता है तो वह वातावरण उसके लिए पहले जैसा नहीं रहता क्योंकि वातावरण में भिन्नता होना स्वभाविक है अतः एक शिक्षक को उसकी मनः स्थिति युक्त रोजगार प्राप्त नहीं हो पाता तो वह उस विद्यालयी वातावरण से सामंजस्य बनाये रखने में सक्षम नहीं हो पाता है। वातावरण सम्बन्धी समस्या के अंतर्गत शिक्षक का अन्य शिक्षको से तालमेल न बैठा पाना, विद्यालय महज टाइम पास का साधन मनना, अध्यापन कार्य में रूचि न आना, शिक्षक विद्यालय में चिढचिढापन स्वभाव का दिखना तथा विद्यालय में देर से आना और शिग्र जाने की कोशिश में रहना आदि।

पारिवारिक समस्या- शिक्षक एक परिवार का सदस्य भी होता है और कभी कभी वह अपने परिवार का मुखिया भी होता है। अतः एक परिवार का सदस्य और मुखिया होने के नाते उसके ऊपर अनेक जिम्मेदारियां भी होती है यदि शिक्षक अपने पेशा से संतुष्ट रहता है तब पारिवारिक संतुष्टि की भी गारंटी देखने को मिलती है। पारिवारिक सम्बन्धी समस्याओं में परिवार में आर्थिक समस्या, अपने परिवार की आपसी झगड़ो का अध्यापन पर प्रभाव आदि। इन सभी के कारण शिक्षक विद्यालय में अपने अध्यापन का सम्पूर्ण समय नहीं दे पाता जिससे वह केवल बहानेबाजी करने की कोशिश करता है। **राजनितिक समस्या-** शिक्षक केवल सामाजिक परिवेश में ही नहीं रहता वरन वह उस समाज में स्थपित राजनीतिक परिवेश में भी रहता है जिसमे उसे कुछ राजनीतिक अधिकार भी मिले होते है। विद्यालयों में राजनीति का माहौल का होना ये आधुनिकता की देंन है चुकि अनेक विद्वानों ने छात्रों को राजनीति से दूर रहने की सलाह दी है। विद्यालय में शिक्षक के सम्मुख राजनीतिक समस्या के अंतर्गत किसी खास विचारधारा से जुड़े रहने पर शिक्षक के साथ अभद्र व्यवहार किया जाना, राजनीत से प्रेरित होकर किसी खास शिक्षक को टारगेट करना, विद्यालय में गुटों में बटना आदि।

3. <u>समस्या कथन (statement of the problem)</u>- प्राथमिक स्तर पर कार्यरत अति उच्च शिक्षित शिक्षक एवं उनकी कार्य संतुष्टि का अध्ययन

4. <u>पारिभाषिक शब्दावली (terms define):-</u>

शिक्षकों की रूचि- व्यक्ति स्वजीवन में प्रायशः स्व रूचि अनुसार उच्च अध्ययन का क्षेत्र चयन करता है। जो उसकी उपार्जन क्षेत्र की योग्यता के साथ सम्बन्ध रखता है,और ऐसी ही योग्यता प्राप्त करना चाहता है। ऐसे ही शिक्षक व्यवसाय में भी कई स्तर होतें हैं जो पूर्व तालिका में स्पष्ट किया गया है। शिक्षक व्यवसाय में उच्च शिक्षा हेतु प्राप्त योग्यता एवं सामर्थ्यवान व्यक्ति कभी-कभी सामाजिक सुरक्षा, आर्थिक सुरक्षा हेतु प्राथमिक व माध्यमिक स्तर को

अपना व्यावसायिक क्षेत्र के रूप में चुनता है। ऐसा करने पर व्यक्ति द्वारा प्राप्त किये गए योग्यता का उपयोग नहीं हो पाता है जिससे व्यक्ति में निराश्य,कुंठा,व्याकुलता,आदि का उद्रेख होना स्वभाविक है व कार्य करने वाले क्षेत्र में उसकी रूचि नहीं रहेगी जिससे वह शिक्षा क्षेत्र प्रभावित होगा। शिक्षा में रूचि व कार्यनिष्ठा का सबसे अधिक प्रभाव पड़ता है। शिक्षक की सबसे बड़ी पूंजी उसके विद्यार्थी होंतें हैं। जो उन्हें हमेशा याद रखतें हैं अतः अच्छे शिक्षक को वे हमेशा याद रखतें हैं अगर शिक्षक रूचि व कार्यनिष्ठता के साथ कक्षा को पढाता है तब बच्चे भी उसकी कक्षा को आनंद के साथ पढना चाहतें हैं। **कार्यसंतुष्टि-** कार्यसंतुष्टि एक अस्पष्ट अवधारणा है। जो कार्य की संस्कृति का अभिन्न अंग है। जबकि कार्य में एक संगठन कार्य के प्रति लोगों का व्यवहार पर्यवेक्षण, कार्य के प्रति अनुबंधन,शिक्षकों की योग्यतानुसार उसकी नौकरी आदि होतें हैं। ये सभी तत्व कार्यसंतुष्टि की अवधारणा को गठित करतें हैं। सर्वप्रथम कार्यसन्तुष्टि,मानसिक,शारीरिक,पर्यावरणीय कारकों के मेल से बनती है जो व्यक्ति इन सभी से स्यवं को संतुष्ट पाता है वह विश्वास से कह सकता है कि मै अपने कार्यसंतुष्टि पाता है वह विश्वास से कह सकता है कि मै अपने कार्य से संतुष्ट हूँ जिससे उनकी कार्यक्षमता स्वतः ही बढ़ जाती है। अतः एक शिक्षक की कार्यसंतुष्टि तब होगी जब वह शारीरिक,मानसिक,वातावरणीय कारको तीनो से संतुष्ट होगा तो उसकी कार्यक्षमता में बढ़ोत्तरी होगी। कार्य संतुष्टि का अभिप्राय किसी कर्मचारी द्वारा उसके कार्य के प्रति निर्मित सामान्य अभिवृति से है। इसका अनुमान इस आधार पर लगा सकतें हैं कि कोई कर्मचारी अपने परिवेश से पुरस्कार की जो प्रत्याशा करता है और वस्तुतः जितना प्राप्त होता है दोनों में कितना अंतर है। कार्यसंतुष्टि को सुखद संवेगात्मक अवस्था के रूप में अभिग्राहित किया जाता है। यह कर्मचारी की आवश्यकताओं की कार्यपरिवेश द्वारा पूर्ति का परिणाम होता है।

कार्यसंतुष्टि सुखद संवेगात्मक अवस्था के रूप में भी प्रदर्शित हो सकती है। कभी-कभी कार्य संतुष्टि का आशय इस बात से लिया जाता है कि व्यक्ति अपने कार्य परिवेश से समग्र रूप में किस सीमा तक संतुष्ट है और कभी-कभी कार्य-संतुष्टि को इस बात पर निर्धारित किया जाता है कि व्यक्ति अपने कार्य पर्यावरण के किसी विशिष्ट आयाम से किस सीमा तक संतुष्ट है अथवा उसके प्रति उसकी भावनाएं किस प्रकार की है।

जीवन में किशोरावस्था उर्जा स्तर की अधिकतम सीमा पर होती है जहाँ युवक और युवतियां अपने भविष्य के कैरियर को लेकर एक सुखद स्वप्न बनातें हैं जिसकी प्राप्ति हेतु उन्हें दिशा निर्देशन की आवश्यकता पड़ती है जो विद्यालयों द्वारा पूरा किया जाता है। भविष्य का निर्माण करने के लिए जहाँ उनकी सहायता संस्था अपने उद्देश्यों को ध्यान में रखकर करती है। संस्था का निर्माण समाज ने इसलिए किया है कि विद्यार्थियों में मूल्यों का संचय,राष्ट्रीयता का भाव, एकता का पाठ तथा विभिन्न ज्ञान विज्ञान का ज्ञानवर्धन इस आशय से किया जाता है कि उनमे भौतिकता

व आधुनिकता का प्रभाव पश्चिमी सभ्यता की तरफ अग्रसर न करके ज्ञान मीमांसा की अंतिम ऊंचाई तक पंहुचाये जिससे प्रग्यास्थ हो सके। हमारी प्राथमिक कक्षा में विभिन्न सामाजिक आर्थिक स्थिति से छात्र-छात्राएं आते हैं अलग –अलग धर्मो के मानने वाले आतें हैं गरीब व अमीर तथा सामान्य परिवारों से बच्चे आतें हैं कमोवेश अध्यापक कर्मचारी भी कुछ ऐसे ही वर्ग से सम्बंधित होतें हैं। अतः गजब की मिशाल अनेकता में एकता को देखने को मिलती है। ऐसे में इनको पढ़ाने वाले अध्यापको का समंजन अपने आप में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है, यदि अध्यापक अपने जीवन के मूल्यों की प्राप्ति भारतीय मानक मूल्यों के आदर्श में रहकर करने वाला होगा तो भविष्य का भारत बहुत स्वस्थ होगा। अध्यापकों के सामाजिक ,आर्थिक स्तर व समायोजन तथा उसके कार्य की संतुष्टि उसके जीवन की संतुष्टि से जुडी होती है। जिसका निरीक्षण उसके द्वारा किये जाने वाले कक्षा-शिक्षण व्यवहार में देखा जा सकता है। असंतुष्ट अध्यापक कुंठाग्रस्त होकर अपनी कक्षा का समायोजन ठीक ढंग से नहीं कर पाता है जिससे निराशाभाव से उसकी कक्षा के विद्यार्थी प्रभावित हुए बिना नहीं रह सकते हैं।

अतः अध्यापकों में अपने जीवन के प्रति संतुष्टि कार्य के प्रति संतुष्टि होने के लिए समाज व सरकार को जागरूक रहना चाहिए। यदि इस पर ध्यान नहीं दिया गया तो कक्षाओं से मूल्य विहीन,धर्म के आड़ में आतंकवाद ही पैदा होगा। मूल्यों में गिरावट,समाज व परिवार का विघटन लोगों में स्वार्थपरकता इतनी बढाती जा रही है जिसके लिए कहीं न कहीं हमारी संरचना जिम्मेदार है। इन्ही सभी विन्दुओं को ध्यान में रखतें हुए शोधकर्ता ने **"प्राथमिक स्तर पर कार्यरत अति उच्च शिक्षित शिक्षक एवं उनकी कार्य संतुष्टि का अध्ययन"** विषय पर शोध कार्य किया है।

5. शोध का परिसीमन (delimitation of the study):-

1. प्रस्तुत शोध महाराष्ट्र राज्य के वर्धा जनपद तक सिमित है।

2. यह शोध कक्षा 8 तक अध्यापन करने वाले अध्यापकों तक सिमित है।

6. शोध का ओचित्य (rational of the study):- अध्यापक का समाज में अतिमहत्वपूर्ण स्थान होता है। **हुमायु कबीर** के अनुसार"**अध्यापक एक राष्ट्र का निर्माता होता है। एक शिक्षक अपनी शैक्षिक प्रक्रिया में समाज का पुनर्निर्माण कर सकता है।** यह सत्य है कि एक शिक्षक अपने जीवन काल में अनेक लोगों को बौधिक परम्पराएँ व तकनीकि कौशल प्रदान करता है। जो कि एक राष्ट्र को नया आकार प्रदान करतें हैं। यह कार्य वही शिक्षक कर सकता है जो अपने कार्य से संतुष्ट हों । एक अध्यापक की कार्य संतुष्टि से आशय है उच्च मानसिक स्वास्थ्य,गुणवत्तापूर्ण शिक्षण कार्य,दक्षता, उच्च सामाजिक-आर्थिक स्थिति आदि से है तो उसकी कार्यक्षमता बढ़

जाती है एक शिक्षक अतिमहत्वपूर्ण व्यक्ति होता है, क्योंकि वह भावी डाक्टर,इंजिनियर,वैज्ञानिक,नेतृत्व व् शिक्षकों आदि को तैयार करता है। एक प्रभावी व सक्षम नागरिक ही राष्ट्र के विकास में महत्वपूर्ण योगदान देता है। ऐसे नागरिक केवल स्वयं के लिए तैयार नहीं होतें वरन वह राष्ट्र के प्रत्येक नागरिकों के रोल माडल भी बनतें हैं तथा उनके जैसे प्रत्येक व्यक्ति बनना चाहतें हैं जिससे वह राष्ट्र एक लक्ष्योंमुखी और प्रत्येक क्षेत्र में अग्रसर होने लगता है लेकिन वर्तमान शिक्षक के कार्य अति लाचार व दयनीय स्थिति में पहुँच गया है। क्या इसका कारण कहीं शिक्षकों की योग्यतानुसार उन्हें कार्य न मिल पाना तो नहीं ? शिक्षा के आदर्श तथा उद्देश्य सम्पूर्ण रूप में एक शिक्षक की गुणवत्ता पर निर्भर करता है और गुणवत्ता तभी दिखायी देगा जब एक शिक्षक को उसकी योग्यतानुसार कार्य दिए जाएँ क्योंकि वे भावी प्रभावी नागरिकों को तैयार करता है। इसलिए यह जानना अति-आवश्यक है कि उनकी योग्यतानुसार कार्य न दिए जाने पर उनकी कार्य संतुष्टि कैसी है ? अतः उनकी कार्यसंतुष्टि का अध्ययन करना आवश्यक हो जाता है। **इस वजह से काफी रिव्यू करने के बाद इस विषय पर मुझे शोध करने की इच्छा महसूस हुई।**

7 शोध के उद्देश्य-

1. प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत अतिउच्च शिक्षित शिक्षकों की पहचान करना।

2. प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत अतिउच्च शिक्षित-शिक्षकों की कार्य संतुष्टि का अध्ययन करना।

3.प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत अतिउच्च शिक्षित- शिक्षकों का विद्यालयी वातावरण के साथ समायोजन का अध्ययन करना।

4. प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत अतिउच्च शिक्षित-शिक्षकों की सामाजिक,आर्थिक पृष्ठभूमि का अध्ययन करना।

8 न्यादर्श-

प्रस्तुत लघु शोध हेतु वर्धा जिले में निजी एवं सरकारी प्राथमिक विद्यालयों में अध्यापन करने वाले अतिउच्च शिक्षित शिक्षकों को प्रतिदर्श के रूप में चुना गया है जो इस प्रकार हैं-

क्रमांक	विद्यालय	संख्या
1.	निजी	25
2.	सरकारी	25
कुल	निजी+सरकारी	50

9. उपकरण-

प्रस्तुत अध्ययन में आंकड़ों के संग्रहण के लिए शोधकर्ता द्वारा इस उद्देश्य हेतु **कार्य संतुष्टि** से सम्बंधित **"नेशनल साइकोलोजिकल कारपोरेशन" डा. मीरा दीक्षित द्वारा निर्मित प्रमापिकृत मापनी** का प्रयोग किया गया।

10. प्रदत्तों का विश्लेषण एवं निर्वचन- प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत सभी उच्च शिक्षित-शिक्षकों की संख्या 50 की श्रेणी में लिया गया है। इन 50 की संख्या में प्रश्नों के माध्यम से आठ स्तर क्रमशः A,B,C.D,E,F,G, H आदि में बांटा गया है। इन आठों का माध्य निकालने के बाद उसका विचलन निकाला गया है। विचलन (S.D.) निकालने के बाद **z फलांक** निकाला गया है। z फलांक निकालने के बाद **JOB SETISFATCATION SCALE** कृत **डा. मीरा दीक्षित** के मैनुअल में **टेबल न.8** से z फलांक का रेंज तथा उसका स्तर ज्ञात किया गया है।

z फलांक रेंज **+2.01** से और उससे ऊपर 17 अतिउच्च शिक्षित शिक्षकों की कार्य संतुष्टि का स्तर '**अत्यधिक उच्च संतुष्टि**' रहा।

z फलांक रेंज **+1.26. से +2.00** तक के बीच में 3 शिक्षकों की कार्य संतुष्टि का स्तर **'उच्च संतुष्ट'** रहा।

z फलांक रेंज **+0.51 से +1.25** के बीच 1 अध्यापक के कार्य संतुष्टि का स्तर **'औसत से अधिक'** रहा।

z फलांक रेंज **-0.50 से +0.50** तक 3 शिक्षकों का कार्य संतुष्टि का स्तर **'औसत संतुष्ट'** रहा।

z फलांक रेंज **-0.51 से -1.25** के बीच में 2 शिक्षकों की कार्य संतुष्टि का स्तर **'औसत से कम संतुष्ट'** रहा।

z फलांक रेंज **-1.26. से -2.00** के बीच में 2 शिक्षकों का कार्य संतुष्टि का स्तर **'असंतुष्ट'** था।

z फलांक रेंज **-2.01 और उससे अधिक** 22 अतिउच्च शिक्षित शिक्षकों की कार्य संतुष्टि का स्तर **'अत्यधिक उच्च असंतुष्ट'** रहा।

हम उपरोक्त ग्राफ में स्पष्ट रूप से देख सकतें हैं कि अतिच्च शिक्षित शिक्षकों की कार्य संतुष्टि का स्तर सबसे अधिक 'अत्यधिक उच्च असंतुष्ट' दिखाई देता है अर्थात प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत अतिउच्च शिक्षित शिक्षक 50 में से 22 शिक्षकों का कार्य संतुष्टि का स्तर **'अत्यधिक उच्च असंतुष्ट** था'।

तालिका 4.1: प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत अतिउच्च शिक्षित शिक्षको की कार्य संतुष्टि, स्तर व उनका प्रतिशत-

क्रमांक	रेंज आफ z फलांक	ग्रेड	शिक्षकों की संख्यां	प्रतिशत	कार्य संतुष्टि का स्तर
1.	+2.01 और उससे ऊपर	A	17	34%	अत्यधिक उच्च संतुष्ट
2.	+1.26 से +2.00 तक	B	3	6%	उच्च संतुष्ट
3.	+0.51 से +1.25 तक	C	1	2%	औसत से अधिक
4.	-0.50 से +0.50 तक	D	3	6%	औसत संतुष्ट
5.	-0.51 से -1.25 तक	E	2	4%	औसत से कम संतुष्ट
6.	-1.26 से -2.00 तक	F	2	4%	असंतुष्ट
7.	-2.01 और उससे ऊपर	G	22	44%	अत्यधिक उच्च असंतुष्ट
कुल			50	100%	

शिक्षको की संख्या तथा प्रतिशत					

11. **परिणाम एवं निष्कर्ष-** प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत अतिउच्च शिक्षित शिक्षकों जिनकी संख्या 50 है इनमें से 22 शिक्षकों का संतुष्टि स्तर अत्यधिक उच्च असंतुष्ट रहा है। इन 50 शिक्षकों में से 17 ऐसे शिक्षक हैं जो अपने आपको अत्यधिक उच्च संतुष्ट बताने का प्रयास किये हैं। 3 ऐसे अतिउच्च शिक्षित शिक्षक थे जिनका कार्य संतुष्टि स्तर उच्च संतुष्ट था। इन 50 शिक्षकों में 1 शिक्षक का कार्य संतुष्टि का स्तर औसत से अधिक संतुष्ट रहा। 3 अतिउच्च शिक्षित शिक्षकों कार्य संतुष्टि का स्तर औसत संतुष्ट रहा। प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत अतिउच्च शिक्षित शिक्षकों में से 2 शिक्षकों की कार्य संतुष्टि का स्तर औसत से कम संतुष्ट रहा वहीँ 2 ऐसे अतिउच्च शिक्षित शिक्षक ऐसे थे जिनका कार्य संतुष्टि का स्तर असंतुष्ट रहा।

प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत अति उच्च शिक्षित शिक्षकों की आर्थिक संतुष्टि 50 में से 21 शिक्षक औसत से अधिक आर्थिक संतुष्ट दिखाई देतें हैं जबकि 29 शिक्षकों की आर्थिक संतुष्टि का स्तर औसत से कम संतुष्ट दिखाई पड़ता है।

12. **शैक्षिक निहितार्थ एवं परामर्श**-- यदि शिक्षक उत्कृष्ट होंगें तो भावी पीढ़ी को सही दिशा-निर्देश दे सकेंगें। इसके लिए उनकी कार्य संतुष्टि आवश्यक है ताकि उनकी कार्य क्षमता में वृद्धि हो सके। चरित्र निर्माण शिक्षा का उद्देश्य है और इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए अध्यापक अपने व्यक्तित्व का प्रयोग करता है। यदि शिक्षक अपने कार्य के प्रति संतुष्ट नहीं होंगें तो वे पूर्ण समर्पण व निष्ठा से अध्यापन कार्य नहीं कर पायेंगें।

संद्रर्भ सूची-

- मंगल, एस.के (2015) शिक्षा मनोविग्यान
- शर्मा, आर.एस.(2008) शिक्षा के तकनीकी आधार
- वर्मा, जे.पी. (2013) शैक्षिक प्रबंधन
- गुप्ता, एस.पी (2017) शोध संदर्शिका सम्प्रत्यय, कार्यविधि एवम प्रविधि
- सिह, अरुण (2017) मनोविग्यान समाजशास्त्र तथा शिक्षा में शोध विधियॉ
- http://www.itkhoj.com>tecch.....
- http://him.wikipedia.org>wiki>.....
- http://www.jagranjuction.com>.....
- Elearning.vov.ac.in>content (शैक्षिक तकनीकी educational technology MAED-104